

सत्र 12: व्यवस्थाविवरण 27-30

डॉ. सिंधिया पार्कर

यह डॉ. सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 12, व्यवस्थाविवरण 27-30 है।

परिचय और सुजरेन-वासल संधियाँ

हम अध्याय 27 से 30 को देख रहे हैं। अब, हमने कानून संहिता को समाप्त कर दिया है, और इसलिए बस बड़ी किताब के भीतर, व्यवस्थाविवरण की बड़ी तस्वीर को रखने के लिए, आपको शुरुआत में ही याद होगा, जब हमने इसकी संरचना के बारे में बात की थी व्यवस्थाविवरण, हमने इसे कई अलग-अलग तरीकों से नाम दिया है जिससे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के व्यवस्थित होने के बारे में बात कर सकते हैं। उनमें से एक सुजरेन-जागीरदार संधि थी।

और हमने हिन्दी और असीरियन संधियों की संधियों के बुनियादी सामान्य लेआउट को देखा जो पाए गए हैं और वे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के व्यवस्थित होने के तरीके के समान प्रतीत होते हैं। खैर, उस संधि का हिस्सा उन चीजों, शर्तों को सूचीबद्ध करना है जिन पर दोनों पक्ष सहमत हैं। यह वही है जो हमें कानून संहिता, अध्याय 12 से 26 में शामिल किया गया था।

अब हम आशीर्वाद और श्राप में प्रवेश कर चुके हैं। तो, क्या होता है जब जागीरदार संधि के प्रति आज्ञाकारी होते हैं या जब वे अलग हो जाते हैं और संधि के प्रति विद्रोही होते हैं? अब उस कानून संहिता संरचना का एक हिस्सा अनुबंध अनुसमर्थन या अनुबंध को दोबारा ज़ोर से पढ़ना भी है। कभी-कभी सालाना, लोगों को उठना होगा और इस अनुबंध को दोहराना होगा और खुद को इस अनुबंध की याद दिलानी होगी। खैर, हमें इन अध्यायों में यह भी मिलता है, इसलिए व्यवस्थाविवरण कुछ हद तक उन दो चीजों को एक साथ मिलाता है। तो, हम पहले अध्याय 27, और 28 पर जाएँगे और फिर हम 29 और 30 पर अपना काम करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 27

इसलिए, हम 27 में देखेंगे कि पुस्तक के प्रवाह, संरचना में थोड़ा सा व्यवधान है। वास्तव में, यदि हम अध्याय 26 से सीधे अध्याय 28 में पढ़ें तो यह अधिक आसान होगा। उन दोनों अध्यायों में, मूसा प्राथमिक वक्ता है। वह वह है जो उठ रहा है और निर्देश दे रहा है, अध्याय 27 थोड़ा पीछे हटता हुआ प्रतीत होता है, और यह कुछ हद तक अनुचित लगता है। परन्तु 27 वही है जो हमें निर्देश दे रहा है कि इस्राएलियों को देश में जाकर क्या करना चाहिए।

एबाल पर बड़े पत्थरों की स्थापना

तो, अध्याय 27, श्लोक एक से शुरू करते हुए, यह कहता है, "फिर मूसा और इस्राएल के सभी बुजुर्ग।" तो, अब हमने स्विच कर लिया है, और हम इस तीसरे व्यक्ति में हैं। यह संपादक का हाथ है जो अध्याय के इस भाग में बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है। "तब मूसा और इस्राएल के पुरनियों ने लोगों को चिताया, कि जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सभी का पालन करो। ऐसा उस दिन होगा जब तुम यरदन पार होकर उस देश में पहुंचोगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है और जब तू पार हो जाए, तब अपने लिथे बड़े बड़े पत्थर खड़ा करना, और उन पर चूने से लेप करना, और इस व्यवस्था के सब वचन उन पर लिखना, जिस से तू उस देश में प्रवेश कर सके जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, और जिस में दूध की धाराएं बहती हैं। और मधु, जैसा तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम से वचन दिया है।

इसलिए, यदि हम श्लोक 2 में एक सेकंड के लिए रुकें, जब यह कहता है, "यह उस दिन होगा जब तुम जॉर्डन पार करोगे।" सब कुछ बहुत तात्कालिक लगता है। जैसे ही तुम यरदन पार करो, जैसे ही तुम्हारे पैर भूमि पर पड़े, तुम्हें यही करना चाहिए। पत्थर स्थापित करो, और पत्थर पर ये शब्द लिखो। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे ही वे जॉर्डन के दूसरी ओर सूखी भूमि पर अपने पैर रखते हैं, उन्हें ये चीजें करनी चाहिए।

अब जब हम पद 4 पर पहुँचते हैं, तो यह कहता है, "इस प्रकार, जब तुम यरदन पार करो, तब एबाल पर्वत पर खड़े होना।" तो, यह पहचानता है कि जब आप जॉर्डन को माउंट एबाल पर पार

करेंगे, तो यह समारोह होने वाला है। खैर, एबाल एक अच्छा दिन है, दिन और आधी यात्रा, और यदि आप यहोशू और न्यायाधीशों के इतिहास को पढ़ते हैं, तो आप जानते हैं कि इस्राएलियों को भूमि पर पहुंचने में थोड़ा समय लगता है। उन्हें ज़मीन पर अपनी राह बनाने के लिए एक तरह की लड़ाई लड़नी होगी। इसलिए, हमें इस समय-सीमा को थोड़े से नमक के कण के साथ पढ़ना होगा। तो, यह तात्कालिक लगता है, लेकिन वहां यह प्राथमिकता का मुद्दा अधिक है। इसलिए, जैसे ही आपके पैर सूखी ज़मीन पर हों, तुरंत नहीं, यह आपके दिमाग में सबसे आगे होना चाहिए। जैसे ही आप भूमि पर पहुंचेंगे, आपके लिए अनुबंध की पुष्टि करना महत्वपूर्ण होगा।

अब ऐसा क्यों है कि उन्हें बड़े-बड़े पत्थर खड़े करने पड़ते हैं और उन पर प्लास्टर चढ़ाना पड़ता है? खैर, शायद कुछ कारणों से। आइए सबसे पहले मैं आपको पत्थरों की एक तस्वीर दिखाता हूँ। ये पत्थर नहीं हैं। हमारे पास एबाल और गेरिज़िम के पत्थर नहीं हैं; इन खास पत्थरों की बात हो रही है। लेकिन हमारे देश में अन्य स्थान भी हैं जहां बहुत बड़े पत्थर पाए गए हैं। और इसलिए, एक दृश्य उदाहरण के रूप में, मैं आपको एक तस्वीर दिखाना चाहूंगा।

यह देश के किसी अन्य स्थान से है, और ये बड़े पत्थर वास्तव में इस्राएलियों से पहले के हैं। तो, ये इस्राएलियों के भूमि में प्रवेश के समय की तुलना में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के समय के बहुत करीब हैं। लेकिन आप जो देख सकते हैं, खासकर यदि आप चित्र में लोगों की तुलना उनके पीछे के बड़े पत्थरों से कर रहे हैं, तो आप देख सकते हैं कि वे कितने बड़े हैं। यह संभवतः उस प्रकार का पत्थर है जिसके बारे में यहां इस विशेष समारोह के लिए बात की जा रही है। तो, बड़े पत्थर खड़े करो।

अब, पत्थर क्यों? खैर, शायद कुछ कारण हो सकते हैं, एक यह कि आपकी आँखें तुरंत चित्र में मौजूद पत्थरों पर टिक जाती हैं क्योंकि वे परिदृश्य पर एक असामान्य चीज़ हैं। इसलिए, जब आप घूम रहे हों और आपको उस आकार का एक पत्थर सीधा खड़ा दिखाई दे, तो इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। यह असामान्य लगता है। तो, यह आपके लिए एक बहुत अच्छे मेमोरी मार्कर के रूप में कार्य करता है।

और फिर आपके पास इस शिक्षा के शब्द हैं जो उस पत्थर पर लिखे हुए हैं। खैर, यह यहां प्लास्टर में लिखे गए शब्दों को कहता है ताकि आप स्पष्ट रूप से देख सकें कि ये शब्द हमारे लिए याद रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण हैं। और पत्थर पर लिखकर, इन शिक्षाओं में इन शब्दों के स्थायी अधिकार का भी अर्थ है ,

तो, पत्थर पर लिखो. अब इस शिक्षा के ये कौन से शब्द लिखे जा रहे हैं? हमारे लिए यह जानना कठिन है। ऐसे पत्थर पर बहुत सारे शब्द फिट हो सकते हैं। वास्तव में, हमारे पास हम्मुराबी के कानून हैं, और उसके पास एक बहुत बड़ा स्तंभ भी है जिस पर उसके सभी कानून लिखे हुए हैं। और उस स्टेला पर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में जितने शब्द हैं, उससे कहीं अधिक शब्द हैं। तो, यह हो सकता है कि व्यवस्थाविवरण की पूरी किताब उस तारे पर लिखी जाए।

या, यह सिर्फ 12 से 26 तक की कानून संहिता की शिक्षाएं हो सकती हैं। हमारे लिए यह जानना कठिन है, लेकिन हमें इस उत्सव के महत्व का सार मिल गया है। जाओ, कुछ ऐसा खड़ा करो जो क्षितिज रेखा पर बहुत स्पष्ट हो जाए, इस शिक्षण के शब्दों में स्थायी अधिकार हो।

इसलिए, यदि हम पाठ पर वापस जाते हैं, श्लोक 4 में, "तो, यह होगा कि जब आप जॉर्डन पार करेंगे, तो आप इन पत्थरों को एबाल पर्वत पर स्थापित करेंगे जैसा कि मैं आज आपको आदेश दे रहा हूं और आप उन्हें चूने से लेपित करेंगे। और वहां आपके परमेश्वर यहोवा के लिथे पत्थरोंकी एक वेदी बनाना, उस पर लोहे का औज़ार न चलाना, आपके परमेश्वर यहोवा की वेदी कच्चे पत्थरोंकी बनाना, और उस पर होमबलि चढ़ाना। अपने परमेश्वर यहोवा के लिये भेंट करना, और मेलबलि चढ़ाना, और वहीं खाना, और अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करना।

फिर, हमें उन संकेतों में से एक और संकेत मिलता है कि ये धार्मिक उत्सव वास्तव में उत्सव, पर्व और त्योहार हैं। ये वे लोग हैं जो एक साथ इकट्ठा होते हैं और अपने बीच में भगवान के साथ भोजन करते हैं।

तो, फिर हमें थोड़ा आराम मिलता है। हमें एक बार फिर संपादक का हाथ मिला। और अब ऐसा लगता है जैसे मूसा और बुजुर्ग एक बार फिर जॉर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर खड़े हैं। "तब

मूसा और लेवीय याजकों ने सब इस्राएलियों से कहा, 'हे इस्राएल, चुप रहो और सुनो। आज के दिन तुम अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा बन गए हो।' जो दिलचस्प है, जैसा कि हम कह सकते थे लेकिन नहीं कहा, वह यह है कि वे सिनाई पर्वत पर अपने परमेश्वर यहोवा के लोग बन गए। खैर, माउंट सिनाई वाचा का मूल दाता था। अब, हमारे पास मूसा और बुजुर्ग हैं जो जॉर्डन के पूर्वी किनारे पर खड़े होकर कह रहे हैं, "आज के दिन तुम बन गए हो," जिसने कई विद्वानों को यह कहने के लिए प्रेरित किया है कि वहां पूर्वी हिस्से में एक वाचा अनुसमर्थन समारोह हुआ होगा। जॉर्डन का. परन्तु फिर, जब वे प्रदेश में जाएंगे, और एबाल और गिरिजिम में खड़े होंगे, तो वे एक बार फिर वाचा की पुष्टि करेंगे, और उस दिन, वे बन जाएंगे। ऐसी बात नहीं है कि वे वास्तव में पहले भगवान के लोग नहीं थे, लेकिन लोगों के दिमाग में यह बात घर कर रही है कि मैं इस दिन भविष्य में स्मृति को बनाए रखने की इस वाचा के साथ हूं। इस दिन, आप परमेश्वर के लोग हैं।

एबाल और गेरिजिम पर वाचा का अनुसमर्थन

तो, श्लोक 11 में, "मूसा ने उस दिन लोगों को यह भी आज्ञा दी, 'जब तुम जॉर्डन पार करो, तो ये लोगों को आशीर्वाद देने के लिए गिरिजिम पर्वत पर खड़े होंगे, और उसने शाप देने के लिए छह जनजातियों की सूची बनाई जो वे खड़े होंगे एबाल पर्वत पर, और वह अन्य छह जनजातियों की सूची देता है। इसलिए एबाल और गेरिजिम और मैंने आपको पहले एबाल और गेरिजिम दोनों की एक तस्वीर दिखाई थी जब हम व्यवस्थाविवरण 11 के बारे में बात कर रहे थे। हमने इस बारे में बात की थी कि इसे सबसे आगे लाना कितना महत्वपूर्ण है इस्राएलियों के मन में वह वाचा है जो उन्होंने अपने ईश्वर के साथ अपनी भूमि में कुछ दृश्य देखने के लिए की है, ताकि हर बार जब वे एबाल और गेरिजिम से गुजरें, तो वे माउंट गेरिजिम के आशीर्वाद, माउंट एबल के शाप को याद रखें।

व्यवस्थाविवरण 28-29

जब हम अध्याय 26 पर पहुंचते हैं, तब हमें आशीर्वाद और शाप की एक सूची मिलती है। तो, अध्याय 27 का अंत हमें बस श्राप देता है। तो, इसमें आशीर्वाद की कमी है।

तो, हम अध्याय 28 पर जा रहे हैं। इसलिए अध्याय 28 में, हम 28 और 29 को एक साथ देख रहे हैं। हम वास्तव में इस जानकारी को दो अलग-अलग तरीकों से व्यवस्थित कर सकते हैं। आशीर्वाद और अभिशाप हैं, लेकिन फिर वादे और धमकियाँ भी हैं। और हम देखेंगे कि ये आशीर्वाद और अभिशाप उनमें से कई कृषि संबंधी हैं। उनमें से बहुतों का ज़मीन से कुछ लेना-देना है--यह आशीर्वाद। अब यह हमारे लिए बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए क्योंकि, जैसा कि हम व्यवस्थाविवरण में देख रहे हैं, लोगों को ईश्वर से जो आशीर्वाद मिल रहा है, वह उनकी भूमि का उपहार है। तो, हम यह अनुमान लगा रहे हैं कि यह भूमि कितनी अद्भुत, कितनी अद्भुत हो सकती है। यह एक प्रकार का ईडन हो सकता है जहां हर चीज़ को उस तरह से व्यवस्थित किया जाता है जैसे भगवान चाहते हैं कि इसे व्यवस्थित किया जाए।

इसका एक हिस्सा भूमि की उपज का होना है, जिस तरह से ईडन ने भूमि का इनाम दिया था। तो, हमें व्यवस्थाविवरण में यह चित्र मिलता है जो हमने अब तक देखा है कि भूमि की क्षमता ऐसी हो सकती है कि भगवान और उसके लोगों, लोगों और उनके आस-पास के अन्य लोगों और भूमि के लोगों के बीच संबंध सभी सद्भाव में एक साथ काम करते हैं .

और इसलिए, जब हम आशीर्वाद और शाप तक पहुंचते हैं, तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि भूमि यहां शामिल है क्योंकि भूमि आशीर्वाद और अभिशाप दोनों को प्रदर्शित करेगी। कब भूमि की देखभाल की जा रही है और इस प्रकार फलदायी हो रही है, और कब समाज और स्थान के बारे में सब कुछ टूटा और बिखरा हुआ है, ऐसी स्थिति में भूमि भी उसकी नकल करेगी।

तो, हम भूमि, प्राकृतिक पर्यावरण के इस पहलू को देखते हैं। लेकिन हम यह भी देखते हैं कि इज़राइल और राष्ट्रों के बीच अभी भी संबंध हैं। अब, जब हमने व्यवस्थाविवरण 4 के बारे में बात की, तो हमने वास्तव में पढ़ा कि कैसे यदि इज़राइल भूमि में जाता है और याद रखता है, तो यह एक भूमि है जो सभी व्यापार मार्गों के बीच में है। यदि आपको यह छवि याद है, तो हमने इस व्याख्यान श्रृंखला की शुरुआत में इस बारे में फिर से बात की थी। इसलिए, यदि इज़राइल इस भूमि में जा रहा है और आसपास के सभी देशों के सभी व्यापार मार्ग इस भूमि से होकर आ रहे हैं, तो

इज़राइल आदर्श रूप से विश्व मंच पर भगवान के चरित्र को प्रतिबिंबित कर सकता है ताकि अन्य लोग देख सकें कि भगवान का चरित्र कैसा है।

तो, यहां अध्याय 28 में, हम यह भी देखेंगे कि आशीर्वाद और शाप को उनके आसपास के लोगों के समूहों द्वारा देखा जाता है। तो, यह विचार यह है कि इज़राइल अलगाव में कार्य नहीं करता है। इज़राइल दुनिया के बहुत बड़े परिदृश्य में बहुत अच्छी स्थिति में है।

आशीर्वाद और अभिशाप

तो, आइए इस विचार के बारे में सोचें; आइए इस विचार पर वापस जाएं कि दो भाग हैं, आशीर्वाद और श्राप। तो, इस प्रकार के आशीर्वाद और शाप ऐसी चीजें होंगी जैसे हम अध्याय 28 से शुरू करते हैं। इसलिए, श्लोक तीन जैसी चीजें, "आप देश में धन्य होंगे। आप शहर में धन्य होंगे। आप देश में धन्य होंगे।" . धन्य है तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और तेरे पशुओं की सन्तान, और तेरे गाय-बैल और भेड़-बकरी के बच्चे धन्य हैं। धन्य है तेरी टोकरी, और तू गूंधने का कटोरा। वे धन्य होने के अच्छे उदाहरण हैं, इसलिए यह सीधे तौर पर धन्य है।

तो, श्रापों के बारे में क्या? ठीक है, श्लोक 16 में, "तू नगर में शापित होगा। तू देश में शापित होगा। शापित होगी तेरी टोकरी, और तू गूंधने का कटोरा। शापित होगा तेरी सन्तान और तेरी उपज। भूमि, तेरे गाय-बैल की वृद्धि, और तेरी भेड़-बकरियों के बच्चे।" आप सकारात्मक और सटीक नकारात्मक, आशीर्वाद और अभिशाप देखते हैं।

वादे और धमकियाँ

खैर, ये वादे और धमकियाँ हमारे पास भी हैं। तो, ये अलग हैं; तब वे आशीर्वाद और अभिशाप से शुरू नहीं होते। वे बस लोगों के कार्यों के प्रभाव के बारे में बात करते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम श्लोक 7 से आरंभ करेंगे। "यहोवा तुम्हारे शत्रुओं को जो तुम्हारे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं, तुम्हारे साम्हने से परास्त कर देगा। वे एक ओर से तुम्हारे विरुद्ध निकलेंगे, और तुम्हारे आगे से सात ओर से भागेंगे। प्रभु ऐसा करेंगे।" अपने खलिहानों में और जिन सभों में तू अपना हाथ लगाए उन सब पर आशीष की आज्ञा दे; जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में वह तुझे

आशीष देगा। यहोवा अपनी शपथ के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके दृढ़ करेगा; तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना, और उसके मार्गों पर चलना। इस प्रकार पृथ्वी के सब लोग यह देखेंगे कि तुम यहोवा के नाम से बुलाए गए हो, और तुम से डरेंगे।

तो, आप यह सुनें। यदि आप इन आदेशों का पालन करते हैं, तो ये चीजें हैं और ये आशीर्वाद या वादे हैं जो आपके रास्ते में आ रहे हैं। और हम फिर से इस मान्यता को देखते हैं कि अन्य राष्ट्र इस बात पर ध्यान देंगे कि एक परस्पर क्रिया हो रही है। इस प्रकार वे राष्ट्र जो इस्राएल के विरुद्ध जाएंगे तितर-बितर हो जाएंगे, और अन्य राष्ट्र देखेंगे कि परमेश्वर ने अपने लोगों को आशीर्वाद दिया है।

खैर, दूसरी तरफ धमकियों के बारे में क्या? जैसा कि हम श्लोक 22 में देखते हैं, हमारे पास कुछ है, "यहोवा तुम्हें क्षय रोग से, और ज्वर से, और दाह से, और तेज गर्मी से, और तलवार से, और झुलसा और फफूंदी से मारेगा, और वे तुम्हारा तब तक पीछा करते रहेंगे जब तक तुम नष्ट न हो जाओ।" . आकाश जो तेरे सिर के ऊपर है वह पीतल का होगा; पृथ्वी जो तेरे नीचे है वह लोहे की होगी। यहोवा तेरी भूमि पर चूर्ण और धूलि बरसाएगा।" तो, अध्याय 11 से याद रखें कि ईश्वर ही वह है जो बाद की बारिश को जल्दी देता है। वह वर्षा जो भूमि के उत्पादन के लिए आवश्यक है। तो, इस स्थिति में, बारिश रुक जाएगी।

"और यह तुम पर तब तक गिरेगा जब तक तुम नष्ट न हो जाओ। यहोवा तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं से पराजित कर देगा। तुम उनके विरुद्ध एक मार्ग से तो निकलोगे, परन्तु उनके साम्हने से सात मार्ग से भाग जाओगे। और तुम एक उदाहरण बन जाओगे पृथ्वी के सब राज्यों पर भय छा गया।" तो फिर, जैसे आशीर्वाद और शाप के साथ, वैसे ही वादों और धमकियों के साथ, यह कृषि के रूप में आता है। उनका स्थान धन्य हो रहा है या उनका स्थान छिन्न-भिन्न और नष्ट हो रहा है। और यह उदाहरण के रूप में सामने आता है कि वे राष्ट्रों के लिए हैं। या तो वे जीतेंगे जब वे उन राष्ट्रों के खिलाफ संघर्ष में जाएंगे जहां वे एक उदाहरण के रूप में स्थापित हैं या राष्ट्र, निम्नलिखित लोग, उन्हें घेर लेंगे और उन्हें मार देंगे।

अब भविष्यवक्ताओं के लिए यह असामान्य नहीं है कि वे बाद में इन कानून संहिताओं को देखें और कहें, ये हम पर आ रही हैं क्योंकि हमने ईश्वर के साथ वाचा तोड़ दी है। ये लाल झंडे हैं जिन्हें खड़ा होना चाहिए और कहना चाहिए, "ये चेतावनी के संकेत हैं। आप लाइन से बाहर चले गए हैं। आपको अपने दिमाग में यह इतिहास सामने लाना होगा कि भगवान कौन हैं और आप उनके रूप में कौन हैं लोग।"

इसलिए, वे क्या होगा इसके बारे में चेतावनी के संकेत देने के साथ-साथ उनकी पसंद के प्राकृतिक परिणामों के बारे में भी हैं।

श्राप जारी रहा

जैसे ही हम शुरू करेंगे, मैं छोड़ दूँगा, मैं अध्याय 28 के अंत का थोड़ा सा हिस्सा पढ़ूँगा, और फिर हम अध्याय 29 में चले जाएँगे। श्लोक 45 में, यह कहा गया है, "तो ये सभी श्राप तुम पर आएँगे और तुम्हारा पीछा करके तुम्हें तब तक पकड़ते रहोगे जब तक तुम नष्ट न हो जाओ, क्योंकि तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं और विधियों को मानकर उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया होगा, जो उस ने तुम्हें दी है। वे तुम्हारे और तुम्हारे वंश के लिए सदैव चिन्ह और आश्चर्य ठहरेंगे, क्योंकि तुम ने ऐसा नहीं किया। सब वस्तुओं की प्रचुरता के कारण प्रसन्न मन से आनन्द से अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करो। इस कारण तुम अपने शत्रुओं की, जिन्हें यहोवा तुम्हारे विरुद्ध भेजेगा, भूखा, प्यासा, नंगा, और सब वस्तुओं की घटी में सेवा करना। वह तुम्हारी गर्दन पर तब तक लोहे की जर्दी डालेगा जब तक वह तुम्हें नष्ट न कर दे।"

तो, श्लोक 47 और 48 में हमें वे दो श्लोक मिलते हैं, जब आप प्रभु की सेवा करते हैं तो क्या होता है और जब आप प्रभु की सेवा से दूर हो जाते हैं, तो आप अन्य राष्ट्रों की सेवा करना समाप्त कर देंगे, इसके बीच का अंतर।

अब, यदि आप आशीर्वाद और शाप को गिनें, तो आप पाएँगे कि शाप अनुभाग असाधारण रूप से लंबा है। तो, ऐसा क्यों है? यहां एक के लिए एक समानता नहीं है। शापों पर जोर देना लोगों को ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित करने में मदद करने का एक तरीका है। तो,

इन सभी चीजों पर जोर दिया जा रहा है जो संभावित रूप से गलत हो सकती हैं, कहने के एक तरीके के रूप में, "इसलिए कृपया अतिरिक्त सावधान रहें ताकि आप अपने भगवान भगवान के साथ की गई वाचा को याद रखें।"

व्यवस्थाविवरण 29 - अनुसमर्थन समारोह - इतिहास को दोबारा बताना

जैसे-जैसे हम अध्याय 29 के करीब पहुँचते हैं, अब हमारे पास इस अनुसमर्थन समारोह के बारे में अधिक जानकारी है जो होना चाहिए। प्रत्येक इस्राएली को इसमें भाग लेना चाहिए। यह सिर्फ पुरुषों की बात नहीं है। यह सिर्फ ज़मीन मालिकों का मामला नहीं है। यह सिर्फ अमीरों की बात नहीं है। यह समुदाय का प्रतिनिधि नहीं है। यह पूरा पूरा समुदाय है।

और यह मान्यता है जैसा कि व्यवस्थाविवरण ने पूरी किताब में माना है कि इज़राइल विफल हो सकता है। तो, हमारे पास पहले से ही, अध्याय 29 में, यह विचार है कि इज़राइल संभवतः अपने बीच में भगवान को पहचानने में असफल हो जाएगा, और फिर हम सदोम और अमोरा के साथ इस विरोधाभास और निर्वासन के वादे को देखने जा रहे हैं।

तो आइए उन पर एक नजर डालते हैं। तो, अध्याय 29 में, "ये उस वाचा के शब्द हैं जो यहोवा ने मूसा को मोआब के देश में इस्राएल के पुत्रों के साथ बनाने की आज्ञा दी थी, उस वाचा के अलावा, जो उसने होरेब में उनके साथ बनाई थी। मूसा ने सभी को बुलाया इस्राएल ने उन से कहा, जो कुछ यहोवा ने तुम्हारे साम्हने मिस्र देश में फिरौन और उसके सब कर्मचारियोंसे और इस देश के सब लोगोंसे किया वह सब तुम ने देखा है, और बड़े बड़े चिन्ह भी अपनी आंखोंमें देखे हैं। आश्चर्य होता है।" यह आपके लिए बहुत परिचित होना चाहिए। जैसा कि हमने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के माध्यम से अपना काम किया है, यह लगातार एक बात रही है कि हमने पीछे मुड़कर देखा है और कहा है, भगवान उनका योद्धा भगवान है। वह पहले ही ये महान कार्य कर चुके हैं। उन्हें बस याद रखने की जरूरत है।

"तौभी यहोवा ने आज तक तुम्हें न तो जानने के लिये हृदय दिया, न देखने के लिये आंखें, और न सुनने के लिये कान दिये। मैं तुम्हें जंगल में चालीस वर्ष तक ले आया हूँ। तुम्हारे वस्त्र कभी

पुराने नहीं हुए, और न तुम्हारी जूतियां पुरानी हुईं।" आपके पैर घिस गए हैं।" तो, फिर से व्यवस्थाविवरण के अध्याय 8 का संदर्भ।

"तुम ने न तो रोटी खाई, और न दाखमधु या मदिरा पिया, जिस से तुम जान लो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। जब तुम इस स्यान पर पहुंचे, तो हेशबोन का राजा सीहोन, और हेशबोन का राजा ओग, बाशान हम से युद्ध करने को निकला, परन्तु हम ने उनको हरा दिया, और उनका देश ले लिया, और उसे रूबेनियों, गादियों, और मनश्शेइयोंके आधे गोत्र को निज भाग करके दे दिया। सो वाचा के इस वचन का पालन करो, कि तू जो कुछ करे उसमें तू सफल हो।

इसलिए, हम यह देखना शुरू कर रहे हैं कि कैसे व्यवस्थाविवरण के ये अंतिम अध्याय उन विषयों को अपनाना शुरू कर रहे हैं जिन्हें हमने व्यवस्थाविवरण के पहले अध्यायों में देखा था। इसलिए हम इस अच्छे निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं क्योंकि हम लोगों के इतिहास को दोबारा बता रहे हैं।

भावी पीढ़ियों की पहचान

तो श्लोक दस में, यह कहता है, "आज तुम सब, अपने प्रधानों, अपने गोत्रों, अपने पुरनियों, अपने सरदारों, यहां तक कि इस्राएल के पुरूषों, अपने छोटे बच्चों, अपनी पत्नियों, परदेशियों, अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े होओ, तेरे डेरों के भीतर लकड़ी काटनेवाले से ले कर पानी भरनेवाले तक कौन-कौन है, इसलिये तू अपने परमेश्वर यहोवा से वाचा बान्धना, और उसकी शपथ जो तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बान्धता है, उस में बान्धना। कि वह आज तुम को अपनी प्रजा करके दृढ़ करे। और जैसा उस ने तुम से कहा या, कि उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को तुम्हारे बापदादों से शपथ खिलाई, वैसा ही वह तुम्हारा परमेश्वर ठहरेगा। अब मैं तुम ही से यह वाचा नहीं बान्धता, शपथ, परन्तु उन दोनों के लिये जो आज हमारे परमेश्वर यहोवा की उपस्थिति में हमारे साथ यहां खड़े हैं, और उनके लिये भी जो आज यहां हमारे साथ नहीं हैं।" तो, आने वाली पीढ़ियों के लिए एक पहचान है।

जैसे-जैसे हम नीचे आते हैं, अब हमें यह पहचान मिलनी शुरू हो जाती है कि इस्राएली विश्वासघाती हो सकते हैं और जब वे ऐसा करते हैं, तो इसके परिणाम होते हैं। और अब, हम सदोम और अमोरा के इस विचार को अपनाते जा रहे हैं। तो मुझे उसे पढ़ने दीजिए, और हम उस अनुभाग के बारे में थोड़ी बात कर सकते हैं।

सदोम और अमोरा समानांतर

तो, मैं श्लोक 22 से शुरू करने जा रहा हूँ, "अब आने वाली पीढ़ी में, तुम्हारे बेटे तुम्हारे बाद उठेंगे और परदेशी जो दूर देश से आते हैं, जब वे देश की विपत्तियों और उन बीमारियों को देखते हैं जिनसे प्रभु ग्रस्त हैं।" वह पीड़ित होकर कहेगा, 'उसकी सारी भूमि गन्धक और खारी, जलती हुई उजाड़, बिना सिली हुई और अनुत्पादक है, और उस में घास नहीं उगती, जैसे सदोम और अमोरा, अदमा और जबूलोन को उखाड़ फेंका गया, जिसे यहोवा ने अपने क्रोध में और में उलट दिया था। उसका क्रोध। और सभी राष्ट्र कहेंगे, 'यहोवा ने इस देश के साथ ऐसा क्यों किया है और यह बड़ा प्रकोप और क्रोध क्यों है?'"

तो, इस श्लोक में हम जो देखते हैं, वह फिर से, यह विचार है कि इज़राइल बहुत बड़े अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर है जिसे अन्य राष्ट्र आकर देखेंगे। लेकिन इस बार, आने और यह देखने के बजाय कि इज़राइल अपने भगवान को कैसे प्रतिबिंबित कर रहा है, वे आते हैं और एक नष्ट भूमि, गंधक और नमक की भूमि देखते हैं। तो, गंधक और नमक दूध और शहद की भूमि के बिल्कुल विपरीत हैं। यह अनुत्पादक भूमि है। इसलिए, इस भूमि के बजाय जो बहुतायत की भूमि होनी चाहिए, यह भूमि नष्ट हो जाएगी।

सदोम और अमोरा का उल्लेख भी काफी दिलचस्प है। यह उत्पत्ति 14 की ओर एक अच्छा सा सिर हिलाने जैसा है। तो वापस पेंटाटेच की शुरुआत में। इसलिए, उत्पत्ति 14 और उसके बाद के अन्य अध्याय सदोम और अमोरा और सदोम और अमोरा में लोगों की गतिविधियों को सामने लाते हैं।

यदि हम सदोम और अमोरा का विस्तार से अध्ययन करें, तो हम देखेंगे कि जब परमेश्वर इब्राहीम से कहता है कि वह सदोम और अमोरा को नष्ट करने जा रहा है, तो यह उत्पीड़ितों के आक्रोश के कारण था। इसलिए, हम सदोम और अमोरा के बारे में सोचते हैं, और कभी-कभी लोग उनके साथ यौन पाप जोड़ते हैं, जो मामले का हिस्सा हो सकता है। लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने लोगों पर अत्याचार किया है, और एक अनुचित आर्थिक व्यवस्था स्थापित की गई है। और उसके कारण, उत्पीड़ितों का हाहाकार, ठीक वैसे ही जैसे इस्राएलियों का हाहाकार, जब उन पर मिस्र के साम्हने अन्धेर किया गया था, बढ़ गया है। तो, यहां सदोम और अमोरा का यह संदर्भ उस समय के संदर्भ में है जब इस्राएली अपनी भूमि में जाते हैं, जो समृद्ध और फलदायी होनी चाहिए। यदि वे अन्दर जाकर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में असफल होते हैं, उत्पीड़ितों की पुकार सुनी जाएगी, और भगवान जवाब देंगे जैसा कि उन्होंने पूरे इतिहास में लगातार जवाब दिया है। और उनकी भूमि भी, अर्थात् भूमि का यह उपहार जो इस्राएलियों को दिया गया है, उन से छीन लिया जाएगा।

एक आशापूर्ण निष्कर्ष - व्यवस्थाविवरण 30

यदि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक यहाँ अध्याय 29 के साथ समाप्त होती, तो यह वास्तव में पुस्तक को समाप्त करने का काफी दुखद तरीका होता। यह बहुत निराशाजनक लगता है, और ऐसा महसूस होता है जैसे पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं है। ऐसा महसूस होता है जैसे हम ईश्वर को उसके लोगों के बीच में पहचानने में विफलता के साथ समाप्त हो रहे हैं।

लेकिन उम्मीद है। इसलिए, बाद के भविष्यवक्ताओं की तरह, वे हमेशा उस संभावित खतरे के बारे में बात करेंगे जो सामने है। वहाँ एक अल्पविराम है, लेकिन जो आशा आने वाली है और अध्याय 30 में, क्या वह आशा हमारे लिए है

इसलिए, जब हम अध्याय 30 को देखते हैं, तो हम जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि एक संशोधित आशा है क्योंकि बहाली संभव है। और पहले कुछ छंदों में, हम पश्चाताप, वापसी और पुनर्स्थापना के इन शब्दों पर ध्यान देने जा रहे हैं क्योंकि ये तीन शब्द अंततः एक विचार की एक

प्रमुख त्रयी बन जाते हैं जो पुराने नियम की बाकी सभी पुस्तकों में दोहराया जाता है। , भविष्यवक्ताओं के माध्यम से, अंत तक, यहां तक कि मलाकी तक, जो कि नए नियम में प्रवेश करने से पहले की आखिरी किताब है।

हृदय का खतना

हम हृदय के खतना पर फिर से गौर करने जा रहे हैं। अब, हमने इसे पहले देखा है, हमने इसे देखा है, और हमने इसके बारे में व्यवस्थाविवरण के अध्याय 10 में बात की है, जहां लोगों को विनम्र होने के लिए अपने दिलों का खतना करने के लिए बुलाया गया था। लेकिन यहां, हम यह देखने जा रहे हैं कि भगवान वास्तव में उनके दिलों का खतना कैसे करेंगे। इसलिए, हम पत्थर के कठोर हृदय के बजाय मांस के हृदय की ओर वापस जा रहे हैं।

और हम यह देखने जा रहे हैं कि हम इस्राएलियों को एक विकल्प के साथ छोड़ रहे हैं, और विकल्प जीवन और अच्छाई तथा मृत्यु और बुराई के बीच है।

तो मेरे साथ अध्याय 30 पढ़ें, श्लोक एक से शुरू करते हुए। " ऐसा ही होगा, जब ये सब बातें अर्थात् वे आशीष और शाप, जो मैं ने तुम्हारे साम्हने रख दिए हैं, तुम पर आ पड़ें, और तुम उनको स्मरण करो।" हिब्रू शब्द वास्तव में वह है; यह एक घूमती हुई गति की तरह है, अपने आप में वापस लौटने की। तो यह पहचान है कि आप भटक गये हैं। "जब तुम उन सब राष्ट्रों में अपने होश में लौट आओगे, जहां से तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें निकाल दिया है, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ, और जो कुछ मैं आज तुम्हें आज्ञा देता हूं उसके अनुसार अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञा मानो, तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बन्धुवाई से छुड़ाएगा, और तुझ पर दया करेगा, और उन सब देशोंके लोगोंमें से जहां यहोवा तेरा परमेश्वर यहोवा ने तुझे तितर-बितर कर दिया है वहां से तुझे फिर इकट्ठा करेगा। इसमें यिर्मयाह अध्याय 3 की गूँज है।

"यदि तुम्हारे निकाले हुए लोग पृथ्वी की छोर पर हों, तो वहां से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें इकट्ठा करेगा। और वहां से वह तुम्हें वापस ले आएगा।" ऐसी कोई दूरी नहीं है जो बहुत दूर हो, जो

ईश्वर की पहुंच से परे हो कि वह अपने लोगों को वापस खींच सके और अपने लोगों को यह पुनर्स्थापना प्रदान कर सके।

श्लोक 6 में, यह कहा गया है, "इसके अलावा तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे हृदय और तेरे वंश के हृदयों का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण के साथ प्रेम रखे, कि तू जीवित रहे।"

परमेश्वर का वचन उसके लोगों को दिया गया

मैं श्लोक 11 पर जा रहा हूँ। यह कहता है, "यह आज्ञा, जो मैं आज तुम्हें देता हूँ, तुम्हारे लिए बहुत कठिन नहीं है, न ही यह पहुँच से बाहर है। यह स्वर्ग में नहीं है कि तुम्हें कहना चाहिए।" कौन हमारे लिये स्वर्ग तक जाएगा, और उसे हमारे लिये ले आएगा, और हमें सुनाएगा, कि हम उसे देखें, और न वह समुद्र के उस पार है, कि तुम कहो, वह समुद्र को हमारे लिये पार करेगा, कि उसे हमारे लिये ले आए, और हमें बनाए। इसे सुनो ताकि हम इसे देख सकें?"

तो, यह कानून कुछ ऐसा है जिसे अधिनियमित किया जाना वास्तव में संभव है, और भगवान के आदेश या नहीं कुछ छिपा हुआ है। वे रहस्यमय नहीं हैं। आपको जादूगरों या मंत्रों का उपयोग करने या झूठे भविष्यवक्ताओं का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है जो जाकर खोज करते हैं और रहस्यों को आप तक लाने के लिए उनका पता लगाने की कोशिश करते हैं। इसके विपरीत, परमेश्वर ने अपने लोगों से बात की है। उन्होंने अपना कानून, अपनी शिक्षाएं, और इस स्थान पर मानवता द्वारा जीवित रहने और पूर्ण होने के बारे में अपने सबसे बड़े संकेत दिए हैं जो वह उन्हें दे रहे हैं। उसने यह उन्हें दे दिया है। इसलिए उन्हें जीवन के रहस्यों को खोजने की ज़रूरत नहीं है। तो, यह विचार है। यह ठीक यहाँ है। यह आपके सामने मूर्त है।

अच्छाई और बुराई का ज्ञान और उनकी पसंद

तो, श्लोक 14 में। "परन्तु वचन तुम्हारे बहुत निकट है, तुम्हारे मुंह में और तुम्हारे हृदय में है, कि तुम उस पर ध्यान दो। देखो, मैं ने आज तुम्हारे सामने जीवन और समृद्धि, और विपत्ति में मृत्यु रखी है।" खैर, यह मेरा अनुवाद है, और मुझे उत्सुकता होगी कि आपका अनुवाद क्या कहता है। वास्तविक हिब्रू है "मैंने आज तुम्हारे सामने जीवन और अच्छाई, मृत्यु और बुराई रखी है।"

नहीं, ये दिलचस्प विरोधाभास हैं क्योंकि जब हम सोचते हैं कि आखिरी बार हमने अच्छे और बुरे के इस विकल्प को कब सुना था जो मनुष्यों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है, शायद बस, हो सकता है कि आपकी सुनवाई आपके दिमाग के पीछे गूँजती हो, खासकर जब से मैं कहता रहता हूँ व्यवस्थाविवरण में उत्पत्ति संबंध हैं। शायद मैं ही तुम्हें वहां ले गया हूँ. लेकिन यह अच्छाई और बुराई है. यह वास्तव में बगीचे का संदर्भ हो सकता है, जब अच्छे और बुरे के ज्ञान का एक पेड़ था, और बगीचे में लोगों के पास एक विकल्प था।

और इसलिए भी, जब लोग भूमि में प्रवेश करते हैं तो प्रवेश द्वार पर उनके पास एक विकल्प होता है, और यह उनके कार्य हैं और वे जो करते हैं वह या तो उन्हें जीवन देता है जो अच्छा है, या मृत्यु और बुराई। और यहाँ यह भी ध्यान में रखना होगा कि मृत्यु और बुराई, यह शारीरिक मृत्यु हो सकती है, लेकिन यह उस निर्वासन के माध्यम से भी मृत्यु है जहां आप जड़ जमा चुके हैं।

तो, श्लोक 16 में, "इसमें मैं आज तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसके मार्गों पर चलो, उसकी आज्ञाओं और विधियों और उसके नियमों का पालन करो, जिस से तुम जीवित रहो, और बढ़ो, जिस से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें आशीष दे। उस देश में जहां तुम अधिकार करने के लिये प्रवेश कर रहे थे।"

साक्षियों को बुलाना

मैं अब श्लोक 19 पर जा रहा हूँ क्योंकि श्लोक 19 में, हमारे पास इसके गवाहों के लिए एक आह्वान है जिसे लोगों के सामने घोषित किया जा रहा है। " इसलिये मैं आज आकाश और

पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी बनाता हूं, कि मैं ने तुम्हारे साम्हने जीवन और मृत्यु, आशीष और शाप को रखा है। इसलिये, जीवन को चुनो ताकि तुम और तुम्हारे वंश जीवित रह सकें, प्रभु से प्रेम करके। हे परमेश्वर, उसकी बात मान, और उस पर स्थिर रह; क्योंकि जिस देश के विषय में तू ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को, तेरे पुरखाओं से शपथ खाई थी उस में जो तू रहता है वही तेरा जीवन और तेरी आयु की लम्बाई है।

तो, इसके साथ, हम अपने समारोहों को बंद करने जा रहे हैं जो भूमि के ठीक किनारे पर हो रहे हैं और फिर अंदर जाकर समारोहों को एबाल और गेरिज़िम में ले जाएंगे, आशीर्वाद और शाप, वह मान्यता जिसे व्यवस्थाविवरण जानता है सच है कि वे शायद चले जायेंगे।

और फिर भी आशा है कि अभी भी बहाली होगी जो संभव है। तो, जीवन और मृत्यु, अच्छाई और बुराई, आशीर्वाद और अभिशाप मेज पर हैं। यह उन्हें चुनना है।

यह डॉ. सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 12, व्यवस्थाविवरण 27-30 है।